क्या संन्यासी संप्रदाय में रह सकता है ?

[यात्रा में एक जैन साधक के इस प्रश्न पर कि 'क्या संन्यासी सम्प्रदाय में रह सकता है ?', पू० बाबा ने कहा :]

सांप्रदायिक बंधन तोड़े बगैर संन्यास संभव ही नहीं है। बंधनमुक्ति के बिना आजादी संभव नहीं है और आजादी के बिना धर्म का आरम्भ ही नहीं होता। संन्यास तो अन्तिम चीज है। जहाँ आजादी के बिना धर्म का आरंभ नहीं होता है, वहाँ संन्यास कैसे संभव है।

जैन कहता है कि सूर्य दीख रहा है तो मैं खाना खाऊँगा और सूर्य नहीं दीख रहा है तो खाना नहीं खाऊँगा। अब खाने का सूर्य के साथ क्या सम्बन्ध है ? खाने का तो भूख के साथ सम्बन्ध है। सूर्य दिखाई देता हो और भूख न हो तो भी खाना गलत चीज है। सूर्य न हो और भूख है तो खाना चाहिए। भूख लगे तो खाना चाहिए, भूख से ज्यादा नहीं, बल्कि कुछ कम ही खाना चाहिए और स्वाद के लिए नहीं, बल्कि शरीर को यंत्र समझकर, देने की दृष्टि से खाना चाहिए। यह है खाने का शास्त्र। संन्यासी अगर सूर्य हो और भूख न हो तो भी खायेगा और सूर्य न हो और भूख लगे तो भी नहीं खायेगा तो वह काहे का संन्यासी है ? संन्यासी को तो ऐसे सब बंधन तोड़ देने चाहिए। तुकाराम ने कहा है 'नको गुन्तूं भोगी, नको पडूं त्यागी।' हमें भोग में भी नहीं फँसना चाहिए।

संन्यासी के लिए यह उचित नहीं है कि फलानी चीज छोड़ो और फलानी खाओ। उसे तो ज्ञानदेव की उस व्याख्या के मुताबिक खाना चाहिए, जिसमें ज्ञानदेव ने कहा है, "आंगा बळ यावें, क्षुधा जावें, की जिभेचे पुरवावे मनोरथ।" शरीर बलवान हो, भूख मिटे या जीभ की इच्छा पूरी हो, इन तीनों दृष्टियों को टालकर खाना चाहिए। चीनी छोड़कर शहद खाना याने गरीब का खाना छोड़कर अमीरी खाना आरंभ करना है। यह हो सकता है कि किसीकी मीठी चीजों पर ज्यादा आसक्ति हो तो साधना की दृष्टि से वह कुछ दिनों के लिए चीनी छोड़ सकता है। लेकिन चीनी छोड़कर शहद खाना शुरू नहीं करना चाहिए।

मैं १९१६ में बनारस से बापू के पास अहमदाबाद जाने के लिए निकला तो रास्ते में मथुरा में एक होटल में गया और उसके मालिक से पूछा कि 'आपके पास चावल हैं ?' तो उसने जवाब दिया, 'क्या आप बीमार हैं ?' वह बात मुझे ऐसी चुभी कि किसीने तीर मारा हो। उत्तर में अक्सर रोटी ज्यादा खाते हैं, चावल कम खाते हैं, इसलिए उस भाई ने मुझसे वैसा सवाल पूछा। फिर उस दिन मैंने चावल नहीं खाया, साग-पूड़ी ही खायी। मेरा पिंड (शरीर) चावल पर बना हुआ था, इसलिए मैंने और पचास चीजें खायीं, लेकिन चावल नहीं खाया तो मुझे लगता था कि मैंने खाना नहीं खाया। उस दिन मुझे भान हुआ कि यह तो गुलामी है। इसलिए तबसे मैंने चावल खाना छोड़ दिया। मुझे लगा कि मुझे चावल का व्यसन ही है, इसीलिए मैंने छोड़ा।

उपनिषदों में एक कहानी है। देश में अकाल पड़ा, इसलिए एक राजा यज्ञ कर रहा था। एक ऋषि, जो कि भूख से पीड़ित था, यज्ञ में कुछ खाना मिलेगा, यूँ सोचकर अपनी पत्नी को लेकर यज्ञस्थान पर जा रहा था। रास्ते में एक भाई एक चीज खा रहे थे। ऋषि ने कहा : 'मुझे भी दे दो।' उसने कहा : 'यह जूठा है।' ऋषि ने कहा : 'कोई हर्ज नहीं।' फिर ऋषि ने वह जूठी चीज खायी। फिर उस भाई ने पूछा कि 'क्या पानी भी पीओगे' तो ऋषि ने कहा कि 'नहीं, वह तो जूठा है।' इसपर उस भाई ने पूछा कि 'फिर जूठी चीज कैसे खायी ?' ऋषि ने जवाब दिया कि 'पानी के बिना मैं अभी जी सकता हूँ, लेकिन खाने के बिना नहीं जी सकता था। पानी मुझे और भी कहीं मिल सकता है।' इस कहानी का सार बड़े महत्त्व का है।

आश्रम में एक दफा अंडे की बात निकली तो किसीने कहा कि अंडा तो शाकाहार में आ जाता है। मैंने कहा कि ब्रह्मचारी के लिए अंडा खाना अनुचित है। उससे कामवासना बढ़ती है। तब बापू ने कहा था कि "तुम ठीक कहते हो। लेकिन बीमार आदमी अंडा खा सकता है। वह ब्रह्मचर्य के खिलाफ नहीं होगा। क्योंकि बीमार का एक ही मकसद होता है। शरीर को स्वस्थ बनाना—इसलिए वह अंडा खायेगा तो अंडे का परिणाम उसके शरीर को ताकत देने में ही होगा। उसपर अंडे का और कुछ बुरा परिणाम नहीं होगा। लेकिन दूसरा कोई अंडा खायेगा तो उसपर उसका बुरा परिणाम होगा।" ● ● ●

कपड़ा नहीं धोया गया था। मैंने उसकी सेवा की। गाँव में गंदगी देखी तो सफाई का काम किया। इस तरह से कुछ न कुछ सेवा मैंने दिनभर में की है। यह हर आदमी रात में अपनी डायरी में लिखे। इसका मतलब यह नहीं है कि घर की सेवा होती ही है। जिनका घर से संबंध नहीं है, उनकी कुछ-न-कुछ खिदमत की हो तो लिख रखे और यह लिखे कि भगवान ने आज मुझसे इतनी सेवा ली है। जिस दिन आपने सेवा नहीं की, उस दिन भगवान ने मेरी सेवा नहीं ली—ऐसा लिखें और यह लिखें कि आज मैं मर गया। जिस दिन सेवा की होगी, उसी दिन लिखें कि मैंने आज इतने भाई-बहनों की सेवा की। मुझे देने का मौका आया तो मैं जीया। आज मैंने तीन दफा खाया, इसलिए मैं जीया, यह खयाल गलत है। ● ● ●

अनुक्रम

१. जिन्हीं नाम घी आइयां गये मसक्कत घाल
मीरासाहिबां ८ जून '५९ पृष्ठ ७७१
२. इन्सानियत को बचानेवाली चार पगडंडियाँ
साम्बा ४ जून '५९ ,, ७७२
३. सेवा जीवन है और अकर्मण्यता मृत्यु
रणवीर सिंगपुरा ७जून '५९ ,, ७७३
४. क्या संन्यासी सम्प्रदाय में रह सकता है ?
,, ७७४

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी।